हिन्दी

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

६

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर

नवम्बर-२०१८

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) समुर्च्छिम जीव
(२) परभव में
(३) जावंत केवि साहू
(४) आत्म कल्याण
(५) अज्ञान परिषह जय
(६) शुभ निमित्त
(७) धर्मरत्न
(८) अपराजित राजा
(९) संवर
(१०) सुदाक्षिण्यता गुण
(११) प्रभुजी की प्रतिमा
(१२) भाषा समिति
(१३) आक्रोश परिषह जय
(१४) अपूर्वकरण
(१५) शठता से
(१६) सम्यक्त्व
(१७) वज्रनाभ राजा
(१८) हित-शिक्षा
(१९) गिरनार पर्वत
(२०) अभय कुमार

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) वराह मिहिर
(२) नवकारसी
(३) सुजानक हाथी
(४) अकुशल निवृत्ति
(५) राजा के पुरोहित
(६) समिति
(७) सम्यग् ज्ञान की
(८) शत्रुंजय पर्वत
(९) सुवर्णबाहु चक्रवर्ती
(१०) शठता
(११) रोमज
(१२) भवनिर्वेद
(१३) मल परिषह
(१४) पेट से चलने वाले
(१५) यशोमती रानी

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) भाषा एषणा
(२) पूजन के
(३) वहन
(४) अंतरद्वीप
(५) मार्ग
(६) एरावत क्षेत्र
(७) परोपकार करना
(८) नेवला
(९) हे नाथ
(१०) रचना
(११) विषधर सांप
(१२) जो कि
(१३) अधोलोक
(१४) होते है
(१५) विघ्न बिना
(१६) खेचर
(१७) कल्याण
(१८) हे भगवान
(१९) क्षुधा
(२०) प्रज्ञा

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	५	(६)	१०
(२)	४	(७)	३
(३)	९	(८)	१
(४)	८	(९)	६
(५)	२	(१०)	७

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) १०
(२) २०
(३) ५६
(४) १२
(५) ९००
(६) ३३
(७) १०
(८) १०००
(९) १३
(१०) १०१

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१) ✓
(२) ✓
(३) ×
(४) ×
(५) ×
(६) ✓
(७) ✓
(८) ✓
(९) ×
(१०) ×

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१) २२
(२) ५
(३) १५-१६
(४) २१
(५) १०
(६) १४
(७) १२
(८) १८
(९) ११
(१०) २७

प्रिंटिंग भूल के कारण अथवा हमसे रह गयी भूल के कारण विद्यार्थीओं को जो तकलीफ होती है, उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी है। ऐसे संजोगो में विद्यार्थी को उसका पूरा मार्क दिया जाता है।

रीमार्क

जांचनेवाले की सही

प्रश्न - ८

१. जावंत केवि साहू का दूसरा नाम सर्व साधु वंदन सूत्र है। भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्रों में रहे हुए जो कोई भी साधुओं, मुनिओ मन, वचन और काया से पापवली प्रवृत्ति करते नहीं, करवाते नहीं तथा करने वालो की अनुमोदना करते नहीं, उन सभी को मैं प्रणाम करता हूँ।

२. माद्य कवि के पिता अतिशय होशियार थे। अपने बेटे को हिन्दुस्तान का प्रथम पंक्ति का कवि बनाना उनकी भावना थी। इसलिए वे प्रत्येक रचना में भूल निकालते थे। परंतु पुत्र के पास दाक्षिण्यता के गुण का अभाव था। उसे अपने पिता की मुख से प्रशंसा सुननी थी। इसलिए उसने एक जाल बिछाई। अपने ही काव्य की प्रत को धुँआ एवं मिट्टी से मलीन कर पिता को थमाई। "यह कोई प्राचीन काव्य है," पिताजी द्वारा उसकी प्रशंसा किये जाने पर उसने कवि का नाम बताया। पिताजी चौंक उठे की ऐसा कपट करने का कारण। और उसे समझाया।

३. परि याने समस्त प्रकार से (कष्ट को) सह याने सहन करना। कुल 22 परिषह हैं।

१) मल परिषह : मैल, धूल या गर्मी के परिताप से पसीना वगैरह आये फिर भी स्नान की इच्छा न करना।

२) चर्या परिषह : चर्या याने चलना (विहार) साधु एक स्थान पर मठ या आश्रम बनाकर न रहे। शास्त्र मर्यादानुसार नवकल्पी विहार करे। उसमें प्रमाद न करे। यह चर्या परिषह जय है।

४. छठवे भव में मरुभूति का जीव शुभंकर नगरी में वज्रनाभ नामक राजा हुआ। वहाँ श्री क्षेमकर तिर्थंकर प्रभू पधारे। उनसे प्रतिबोधित होकर दीक्षा ले ली। ग्यारह अंगोका अभ्यास कर जंगाचरण की लब्धि प्राप्त की। उस लब्धि के बल से सुकच्छ विजय में ज्वलन पर्वत पर जाकर कायोत्सर्ग में रहे। उस भव में कमठ का जीव 'कुरंग' नामक भिल्ल बना। साधु को देखकर भिल्ल को वैरभाव उत्पन्न हुआ और साधु को बाण मारा और साधु की मृत्यु हुई।

५. जो अन्य को ठगे .... माया करे वह शठ। जो अशठ होता है, वह अन्य को कभी भी ठगता नहीं। धूर्तता नहीं करता वह विश्वास करने योग्य है। गर्मीका समय था, एक गाडी स्टेशन पर आई, सब फेरीवाले अपनी चीजें बेचने पुकार लगा रहे थे। एक गरीब औरत पानी की मटकी लेकर दौड रही थी। एक सेठ ने उसे आवाज दी। उसने सेठ को ठंडा पानी दिया। सेठ बोला, "मैं तुझे आठ आने दूँगा। उस चक्कर में उसने छुट्टे पैसे दिया और सेठ ने उसको पैसे दिया तब तक गाडी की गति बढी और उसे खोटे सिक्के दिए। ऐसी धूर्तता वह सेठ ने दिखाई।